वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

जून– 2015

* देवात्मा फरमाते हैं
* देव प्रभाव
* शुभ संग्राम
* देव आश्रम (डेराबसी) में विशेष सत्संग
* भाव प्रकाश
* जरूरी निवेदन

देवात्मा फरमाते हैं

घमंड के वश में होकर इन्सान अपनी झूठमूठ बहुत अधिक कीमत लगाता है और अपने आपको बहुत बड़ा समझता है। जो काम वह नहीं कर सकता, उसके करने का भी दम भरता है। एक जन जो पहाड़ की चोटी पर खड़ा हुआ था, उससे हमने कहा कि यहां से भाग कर नीचे उतरोगे, तो गिरने का अंदेशा है। परन्तु उस घमंडी जन ने कहा कि नहीं, मै भागकर उतरूंगा और नीचे नहीं गिरूंगा । चुनाचे वह उतरने लगा और धड़ाम से नीचे गिर पड़ा । एक कछुए और खरगोश ने एक ही स्थान में पहुंचना था । खरगोश तो यह सोच कर कि अभी आराम करें, एक छलांग मारेंगे और झट वहां पर पहुंच जाएंगे, वहीं पर ही सोया रह गया और कछुआ बेचारा यह समझता था कि मैं उससे तेज तो नहीं चल सकता, वह धीरे धीरे चलता रहा और मंज़िल मकसूद तक पहुंच गया। इस प्रकार से घमंडी जन की यह आवाज़ होती है कि यह काम अमुक दिन तक हो जाएगा, जब कि इसमें कितने ही विघ्न उत्पन्न हो सकते हैं। इसलिए भले जन उन विघ्नों का भी ख्याल रख लेते है। और यदि वही काम आठ दिन में समाप्त होने की बजाए चार दिन में समाप्त हो जाए, तो कौन सी तबाही आती है? उन चार दिनों में तुम्हें भलाई करने का और मौका मिल जाएगा। याद रखो कि दीन होकर भलाई का रास्ता खुलता है, घमंडी के लिए भलाई के सब रास्ते बंद है।

अहं अनुरागी देवात्मा से फट जाता है, इसलिए उस तक देव ज्योति के पहुंचने का सिलसिला भी बन्द हो जाता है। और फिर यदि तुम्हें देवात्मा की ज्योति मिल भी जावे, परन्तु तुम स्वार्थी रहकर उसे औरों तक न पहुचाओं तो भी तुम तक उस रोशनी का पहुंचना बन्द हो जाएगा। इसलिए आवश्यकता है कि तुम अहं अनुरागी न बनो, परोपकारी बनो। तुम खुद मेरी रोशनी को पाओ और उसे औरों तक पहुंचाओ। तुम्हारी यह कामना हो कि मैं देवात्मा की रोशनी पाऊंगा और विशुद्ध भावों से उसे औरों तक पहुंचाऊंगा। प्रतिदिन साधन करके इस रोशनी को प्राप्त करो और फिर उसे औरों तक पहुचाओ। उसे अपने तक ही बन्द न रखें, वरना वह तुम से छिन जाएगी और तुम फिर पहले की न्याईं अंधकारग्रस्त हो जाओगे। तुम्हें चाहिए कि मेरी इस शुभ इच्छा का साथ दो, मेरी ज्योति को खुद पाओ और उसे औरों तक पहुंचाओ।

अहं अनुराग से इन्सान मरता है। वह अपने उलट कुछ नहीं देख सकता । वह सचाई नहीं चाहता। देवत्वसिंह जी के जीवन में तब सच्ची बेहतरी का क्रम आरम्भ हुआ, जब उन्होंने अपने भीतर के अहं अनुराग को अपने लिए महा हानिकारक बोध किया और वह उससे मुक्ति पाने के साधनों में लग गए ।

अहं अुनुरागी जन झूठ को सच समझता है। वह कहता है कि मैं सब कुछ जानता हूं । अहं अनुराग देवात्मा से फाड़ देता है, घृणा पैदा कर देता है। इसका फल यह होता है कि ऐसा जन अन्धकार से घिर जाता है, धर्म साधन करना नहीं चाहता, किसी की सच्ची खूबी नहीं देख सकता और न ही देखना चाहता है। वह सचाई देखने के अयोग्य हो जाता है।

धर्म जीवन

खण्ड 28 अंक 6

सम्पादक डा. विनोद खेड़ा | जून – 2015 वार्षिक मूल्य 50 रूपये | सह सम्पादिका सुरजीत बराड़

देव प्रभाव

जिन देव प्रभावों को प्राप्त होकर मनुष्यात्मा के भीतर उच्च परिवर्तन उत्पन्न होता हो, न चाहकर भी वह एक वा दूसरे प्रकार का उच्च परिवर्तन लाभ करता हो, किसी नीच गति से परित्राण पाता हो, और किसी उच्च गति को ग्रहण करने के योग्य बनता हो, वह देव प्रभाव मनुष्य जगत् में कैसे विलक्षण! और यह देव प्रभाव जिन देव शक्तियो से निकल कर किसी आत्मा तक पहुंचते हों, वह देव शक्तियां कैसी अद्वितीय!! और यह देव शक्तिां जिस आत्मा में विकसित हुई हैं, वह देवात्मा कैसा अलौकिक!!! मेरी यह आकांक्षा है, कि इस समय मेरे देवात्मा के द्वारा तुम्हें ऐसे देव प्रभाव प्राप्त हों, क्योंकि मेरे इन देव प्रभावों को प्राप्त होकर ही कोई आत्मा सत्यधर्म का यथार्थ बोधी और अधिक से अधिक बोधी हो सकता है, बिना उसके कदापि नहीं। स्मरण रक्खो कि तुम में से जिस जिस को सत्य धर्म और अधर्म विषयक अल्पाधिक ज्ञान हुआ है, वह मेरे देव प्रभावों के द्वारा हुआ है, और तुम्हारा यह ज्ञान केवल मेरे देव प्रभावों के द्वारा ही तुम में रह सकता है, बिना उसके कदापि नहीं। तुम मेरे देव प्रभावों से कट कर सत्य धर्म वा जीवन तत्व विषयकमहा दुर्लभ ज्ञान के कदापि अधिकारी नहीं रह सकते! भौतिक ज्योति से कटकर जैसे तुम्हारा अन्धकार में बास करना और अन्ध बनकर ठोकरें खाना अनिवार्य है, वैसे हि मेरे देव प्रभावों से कटकर और मेरी देव ज्योति से वंचित होकर तुम्हारे लिए अन्धकार में रहना और दिनों दिन अन्धता में ग्रस्त होना प्रकृति के अछल नियम के अनुसार अनिवपार्य है। जो जन देव समाज से कट कर अथवा देव समाज में रहकर भी मेरी देव ज्योति विषयक कुछ भी किरणों को अपने हृदयों में लाभ करने के अधिकारी नहीं रहे वा नहीं बने, उनकी अवस्था प्रकृति के इस नियम की अटलता का साक्षात् प्रमाण है। ऐसा हो, कि तुम में से जो जो जन जहां तक अधिकारी हों, वह सब जन अपनी अपनी योग्यता के अनुसार मेरे देव प्रभावों को ग्रहण करके उच्च परिवर्तन लाभ करें। तुम्हारा मेरे द्वारा जहां तक अधिक से अधिक शुभ हो सकता हो, वहां तक अधिक से अधिक शुभ हो, और तुम्हारे हित के लिए मेरा संग्राम सफल हो।

शुभ संग्राम

पदमपुर (राजस्थान) 17.3.2015 से 23.3.2015

शाम 8.30 बजे :– सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने इस सभा में बताया कि धर्म कोई ऐसी चीज़ नहीं, जो किसी को पकड़ा दी जाए । वैसे ही जैसे विद्या का दान किसी को पकड़ाया नहीं जा सकता। इनको प्राप्त करने के लिए पर्याप्त शर्तो को पूरा करना पड़ता है। सर्वप्रथम सम्बन्धों में हमारे व्यवहार हमारे धार्मिक होने की शर्त पूरी करते हैं । परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने सम्बन्धों को महत्व दिया है। हमारा सारा जीवन हमारे उपकारियों, हमारे सम्बन्धियों की देन हैं। उन्होंने एक सास का उदाहरण पेश किया जो अपनी बहू को अपनी बेटी की तरह प्यार करती थी । उसका सम्बन्ध अपने पति और बहन भाईयों से भी प्रशंसा योग्य था उनकी असमय मौत परिवार से न भरने वाला घाटा हुआ है। उनकी बहू कई महीने तक उस प्यारी सास मां को याद करके वियोग महसूस करती रही। अबोधी मनुष्य तो अपने कुर्बानी के पुंज, त्याग की मूर्ति माता पिता को दुखी करते हैं। अपने व्यवहारों को भी नम आँखों से सभापति जी ने वर्णन किया, गुरू महाराज को शुक्राना पेश किया। ऐसी उच्च संगत की आवश्यकता महसूस करवाने का प्रयत्न किया, संगत ही सम्बन्धों में हमारी वास्तविक सूरत को दिखा सकती है, हमारे व्यवहारों को बदलकर हमें सच्चा धार्मिक बना सकती है।

18.3.2015 सुबह 9 बजे –सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि इस संसार में विकास का क्रम जारी है। प्रतिदिन नई रोशनी, नया ज्ञान, नई मशीनरी, नई दवाईयां, नए ईलाज, नए खेती के तरीके पैदा हो रहे हैं। इस विकास को देखकर स्वयं ही मनुष्य अचम्भित है। पहले ग्रामफोन, रेडियों थे, फिर T.V. आए, पर अब Internet ने सारी दुनियां को जोड़ दिया है। Einstine के खोजे सिद्धान्त ने भौतिक विज्ञान को और विज्ञानिकों को नए आधार और अर्थ प्रदान किए हैं। विकास क्रम में देवात्मा का आर्विभाव हुआ है, उसे समझने के लिए विशेष समझ, दिमाग वा हृदय की आवश्यकता है। उनका देव जीवन विलक्षण है, उनकी ज्योति और तेज विलक्षण है। इस देव ज्योति को पाकर एक–एक चोर अपनी चोरियां स्वीकार करता है। चोरी की हुई रकमें वापिस करता है। यह विलक्षण करामातें है। रिश्वतखोर अपनी इस नीचता को समझने के लिए मजबूर हो जाते हैं और वह इस पाप से मुक्ति पा लेते हैं। देव असरों में आए ऐसे परिवर्तन के ठोस उदाहरण पेश किए ।

18.3.2015 रात 8½ बजे – सभापति श्रीमान बल बहादुर सिंह जी ने बताया मनुष्य सुख परायण है। सारी उमर सुख प्राप्त करने में लीन रहता है वास्तव में यह सुख अनुराग ही उसके परिचालक भाव है। धन का सुख प्राप्त करता 2 मनुष्य धन का गुलाम बन जाता है। यह गुलामी बहुत घृणित और पाप मूलक दृष्य पैदा करती है। एक सेठ जो धन का गुलाम बन चुका था, बेटे का ईलाज न करवा सका, परन्तु उसका बेटा मर गया। एक जन से अपनी बेटी की इसलिए शादी नही की कि दहेज पर पैसा खर्च होता था घर में बैठी ही वह बूढी हो गई। मनुष्य के यह सुख प्रेम उसको पूर्ण रूप से अपने अधिकार में ले लेते है। सुख स्वाद मनुष्य की बिमारियों वा उसकी मौत के कारण बनते है। मोगा शहर में बाघ साहिब बड़े माननीय जन थे। वह शुगर के मरीज़ थे । मीठा उनके लिए ज़हर था, परन्तु उन्होंने इतनी मात्रा में आईस क्रीम खा ली, बीमार हो गए और आखिर मर गए ।

काम अनुराग की लीला बलात्कार के रूप में प्रतिदिन की घटनाएं हम अखबारों में पढ़ते है। उदाहरण देकर समझाया गया कि मनुष्य को इस बर्बादी की गुलामी से बचने की नितान्त आवश्यकता है। भगवान देवात्मा की ज्योति के द्वारा यह गुलामी नज़र आती है, उनकी शक्ति उस गुलामी से आज़ादी पाने की लालसा वा योग्यता प्रदान करती है।

19.03.2015 सुबह 8.30 बजें :– सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि मनुष्य पशुओं से विकसित होकर भी मानसिक तौर पर इतना विकसित नहीं हुआ जो वह नेचर की घटनाओं को नहीं समझ सके, इसलिए उसके डर की भावना ने देवी देवताओं को घड़ लिया, उनकी पूजा, अराधना शुरू कर दी। यही पूजा, अराधना ने धर्म का रूप ले लिया । इसलिए सच्चे धर्म की किसी को कोई ज्ञान नहीं। सच्चा धर्म मनुष्य को अनुचित दुखों से बचाता है। उसकी सार वस्तु आत्मा की रक्षा करता है। धर्म के बिना मनुष्य का जीवन अनुचित दुखों का घर बन जाता है। घर में कलह, कलेश, नर्क रोग और दुख रहेंगे । आत्मा को बचाना ही जीवन तत्व है। आत्मा क्या है? उसकी बनावट क्या है? आत्मा के रोगक्या है? आत्मिक रोगों से बचाव कैसे हो? आत्मा बलवान कैसे बनती है? इसका ज्ञान धर्म का ज्ञान है। विनाशकारी काम करने वाले चोर, डाकू, रिश्वतखोर, वेश्यागमनी करने वाले अपने जीवन का नाश करते है। पाप मुक्त होकर ही धर्म की सम्भावना हो सकती है। मिथ्या को छोड़ना भी धर्म पाने के लिए आवश्यक है। धर्म साधन ईमानदारी, पवित्रता के साधन है। परहित भाव धर्म का राही बनाता है । श्रद्धा का भाव धर्म का अत्यन्त आवश्यक अंग है। श्रद्धा पैदा करने के लिए महान निष्काम परोपकारियों के जीवन की सुन्दरता देखकर उनके आगे झुकना आवश्यक है। सभापति जी ने एक नेत्रहीन परोपकारी के सुन्दर जीवन के दर्शन करवाए, ऐसे व्यक्तियों को याद करके उनके आगे दिलों को झुकाकर, श्रद्धा का भाव पैदा होता है। एक विशेष अध्यापक के गुणों को देखा । माता–पिता भी श्रद्धा की मूर्ति बन जाते है। जब उनके महान गुण नज़र आते है। श्रद्धा भाव जीवन की खुराक है। हमारे सामने ऐसे जन रोल मॉडल के तौर पर होने चाहिए । उनके जीवन उच्च प्रेरणाओं के स्त्रोत होते हैं।

19.3.2015 रात 8.30 बजे :– सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी । इस सभा में बताया गया कि धर्म ग्रन्थ और धर्म प्रचारक पांच विकारों का वर्णन करते है। इनके शत्रुओं का बार बार ज़िक्र होता है। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार । आज की सभा में क्रोध को समझने की कोशिश करेंगे । हमारी किसी सुख मूलक इच्छा पर जब चोट लगती है, तो क्रोध पैदा होता है। सुख भाव तृप्ति की मांग करते हैं, जब यह तृप्ति नहीं होती तो क्रोध पैदा होता है। यह मनुष्य को विवेकहीन बना देता है। एक जन ने अपने छोटे से बेटे को जलते तन्दूर में फैंक दिया, इसलिए कि जो रूपये लेकर आए थे, उसने उन्हें तन्दूर में फैंक दिया था। धन का सुख छीनने से उसके क्रोध ने उसे ज़ालिम बाप बना दिया । एक लड़की ने अपने पिता और आठ परिवारिक जनों का कत्ल कर दिया, क्योंकि उसके पिता ने उसकी इच्छा पूरी नहीं की। हमारे भीतर अनेको सुख लालसाएं होती है। सब की तृप्ति सम्भव नहीं होती। अनुचित इच्छाए पूरी होनी भी नहीं चाहिए ।

उसके बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी ने क्रोध द्वारा उपजी घृणा के बहुत से उदाहरण पेश किए। कई पढ़े लिखे जनों के बहुत घातक उदाहरण पेश किए ।

देवगुरू भगवान के देव प्रभावों की झांकियाँ पेश की। उनके प्रभाव क्रोध को काबू में करने के लिए अति आवश्यक है। काश! हम उन्हें लाभ कर सकें।

20.3.2015 सुबह 9.00 बजे :- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी पहले दिन की श्रद्धा भाव की सभा को दोहराया । उन्होंने उच्च भावों के महत्व को समझाया । श्रद्धा भाव, शुक्रगुज़ारी, हमदर्दी यह सब धर्म के ज़रूरी अंग है। इस सभा में सभापति जी ने शुक्रगुज़ारी की पूरी व्याख्या की। श्रवण कुमार जैसा माता पिता का भक्त कहां मिलता है। महाराणा प्रताप के उपकृत भामाशाह थे, उन्होनें उन उपकारों का बदला उस समय चुकाया जब महाराणा प्रताप मुगलों के आगे न झुकने के कारण जगह जगह भटक रहे थे। परम् पूजनीय भगवान देवात्मा अधिकारी मनुष्यों को शुक्रगुजार बनाते हैं। डा. विनोद जी खेड़ा की एक उपकृत लड़की बीबी सुरिन्द्र कौर ने बार बार उनको अमरीका में पास बुलाकर, भेंट देकर उनके लिए कृतज्ञता का बहुत सुन्दर उदाहरण पेश किया है। यह उदाहरण एक उपकृत विद्यार्थी का है, जो औरों के लिए प्रेरणा स्त्रोत है। श्रीमान सरदार जमीयत सिंह जी की कृतज्ञता ने एक ग्रामीण लड़के को पढ़ाकर तहसीलदार के पद पर पहुंचा दिया । और तहसीलदार साहिब ने अपने उपकारी के पोते को (जिसकी मां का जन्म के समय देहान्त हो गया था) अपनी पत्नी को दूध पिलाने के लिए दे दिया, उनकी अपनी सन्तान जो उसकी मासी को दे दी, और वहां वह मर गई परन्तु अपने उपकारी के पोते को बचा लिया । वह ग्रामीण लड़का न केवल तहसीलदार बना, बल्कि अपनी ईमानदारी के कारण फरिश्ता तहसीलदार कहलाए । यह सभा बहुत ही प्रभावशाली थी । और अधिकारी जन शुक्रगुज़ारी की तरंगे महसूस करते थे। ऐसा अमृत सब को मिले ऐसी सब की कामना है।

20.3.2015 सुबह 8.30 बजे :– सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने विकास के दो मूल नियमों के विषय में वर्णन किया । मनुष्य के उच्च विकास के लिए पहला नियम उसकी विरासत का नियम है। मनुष्य को जन्म से शारीरिक, मानसिक और हार्दिक योग्यताएं वा अयोग्यताए मिलती हैं। उनके आधार पर अनुकूल वा प्रतिकूल परिस्थितियों में मनुष्य का विकास वा विनाश होता है। क्या मानसिक वा क्या हार्दिक पूंजी का विकास अनुकूल हालात में ही सम्भव है। यह दूसरा नियम है, जिसे वातावरण कहते हैं। मनुष्य अपनी विरासत को तो नहीं चुन सकते, परन्तु वातावरण चुना जा सकता है। अधिकारी आत्माओं को यदि उच्च संगत मिले तो पाप जीवन नष्ट हो जाता है। उच्च संगत द्वारा पंडित नेत राम जी, श्रीमान नौध सिंह जी आदि की पाप भरी ज़िन्दगी से उद्धार हो गया, वह पवित्र और परोपकारी बन गए । ऐसी प्रभाव दायक संगत से और पापी जनों का भी उद्धार हो रहा है, इसमें आते रहने की परम आवश्यकता है।

21.3.2015 सुबह 9.00 बजे :– सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि हम प्रतिदिन इन विषयों पर सभा करते रहे हैं, धर्म की क्यों आवश्यकता है? इसका ज्ञान क्या है? धर्म के विषय क्या है? मनुष्य के जीवन का लक्ष्य क्या है? आत्मा क्या है? यह सब ज्ञान बहुत बारीक और विशाल भी है। इसको समझना सबके वश की बात नहीं। आज इस पर विचार करेंगे कि असली साधन, बुराईयों से बचना सबके लिए आवश्यक । मांसाहार, दुराचार जीवन के दुश्मन है। सेहत के लिए सैर का नियम आवश्यक है। Sir Philip Sideny ने असल जीवन का प्रमाण दिया जब अपने हिस्से का पानी ज़ख्मी सिपाही को पिलाकर कहा कि Try need is greater

than mine और अपने प्राण त्याग दिए । दूसरों के ख़्याल के बिना नेकी नहीं आती । नेकी घर से, मां से शुरू होती है। एक श्रद्धावान, मां के भक्त का उदाहरण दिया। एक रिक्शा वाला प्रतिदिन एक अपंग की प्रतिदिन सेवा करता था । दूसरों की रक्षा और भलाई में हमारी रक्षा और भलाई है।

गंगानगर

21.3.2015 रात 8½ बजें :– सभापति श्रीमान बलबहादुर जी ने बताया कि आज के युग में भी असंभव घटनाओं पर विश्वास करते हैं, जो बचकाना महसूस होती हैं। परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने जो धर्म शिक्षा दी है, वह हर युग में आधुनिक रहेगी, क्योंकि उन्होंने फरमाया है कि मेरी जो शिक्षा विज्ञान के अनुसार न हो, वह त्याग करने के योग्य है। सच्चाई का पैमाना वैज्ञानिक विधि है, कोई और अथारिटी नहीं। उन्होंने सम्बन्धों में उच्च व्यवहारों को धर्म के कर्म बताया है। उच्च व्यवहार उच्च भावों के द्वारा होते हैं। भाई – भाई के सम्बन्ध में त्याग कुर्बानी के दृष्टांत बताए गए । एक सास का अपनी बहू के प्रति कैसा स्नेह सत्कार था बहुत सुन्दर ढंग से पेश किया गया। ऐसे व्यवहारों के द्वारा ही धर्म आता है। सत्गुरू के प्रभावों के द्वारा श्रीमान सेवा सिंह जी के अपने भाई के प्रति और अपने नौकरों के प्रति उच्च व्यवहारों का वर्णन किया ऐसे ही देव प्रभावों की आवश्यकता है।

22.3.2015 सुबह 9.30 बजे :– सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि पशु सीमित ज्ञान पा सकते हैं। परन्तु मनुष्य बहुत विशाल ज्ञान प्राप्त कर सकता है। पदार्थो का ज्ञान, परिवर्तन का ज्ञान, नियमों का ज्ञान पा सकता है। तर्क शक्ति भी मनुष्य में ही है। नई नई खोजों की संस्थाएं खुल गई हैं। परन्तु दुख इस बात का है कि मनुष्य अपना ज्ञान नहीं पा सकता । यह उसकी कृपा – पात्र अवस्था है मनुष्य को कौन से भाव वा शक्तियां चला रही हैं, उसका ज्ञान भी मनुष्य को तनिक भी नहीं है। बलात्कार, चोरी, जुआं, कामवासना ऐसे नीच भावों ने उसको पागल बना रखा है। एक लेडी डाक्टर ने जो जज को कत्ल करवाया, स्वयं जेल गई, उसके पीछे उसकी काम वासना थी । धन अनुराग भाई – भाई को दुश्मन बना देता है। कत्ल करवा देता है। धर्म गुरू भी जेल जाते हैं, उन्हें भी अपनी नीच हवसों का ज्ञान नहीं। यह भाव जीवन के नाशक हैं। आत्मा के विषय में ज्योति प्राप्त किए बिना अपने भावों वा परिचालिक शक्तियों का ज्ञान नहीं होता। मनुष्य के मरने के बाद क्या बनता है, उसका भी संक्षेप में वर्णन किया। नीच अनुरागी मनुष्य परलोक नहीं जा सकते ।

22.3.2015 रात 8.30 बजे :– सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने इस सभा में बताया विश्व में प्रत्येक घटना किसी न किसी नियम को लेकर होती है। पूरा विश्व नियम – बद्ध है। विश्व के यह नियम अटल है। प्रत्येक अस्तित्व इन नियमों के अधीन है। विश्व के इन नियमों के द्वारा ही नेचर में परिवर्तन होता है। परिवर्तन के द्वारा नये से नये अस्तित्व पैदा होते हैं, बहुत से लोप होते रहते हैं। परम पूजनीय भगवान देवात्मा का आर्विभाव भी इन विकासकारी नियमों के द्वारा ही हुआ है। उनके भीतर देव शक्तियों का विकास हुआ है। उन देव शक्तियों से देव ज्योति और तेज का विकास हुआ है। वह मनुष्यों के भीतर आश्चर्यजनक परिवर्तन पैदा करते हैं। उनकी देव ज्योति और देव तेज की किरणें जब अधिकारी आत्माओं तक पहुँचती हैं, तो उन्हें अपनी परिचालक शक्तियों का ज्ञान होता है। बड़े – 2 पापी,

अपराधी अपनी पाप-मूलक ज़िन्दगी को छोड़कर परोपकारी का सेवाकारी वजूद बने हैं। वह अपनी बर्बादी से बचे है। श्रद्धेय श्रीमान कनल जी, श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी जैसी हस्तियों ने विद्यार्थियों की सेवा और उनका विकास किया है। ऐसी सेवाकारी हस्तियों को पैदा करने वाले गुरू के आगे मनुष्य सजदा करने के लिए मजबूर हो जाता है।

23.03.2015 सुबह 9.00 बजे :–

सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने प्रश्न किया कि विश्व क्या है? कहलाने वाले धार्मिक पुरूष नहीं जानते, परन्तु वैज्ञानिक जानते हैं। दूसरी बात कि मैं क्या हूं? हम इसके विषय में हम बहुत कम जानते हैं। तीसरी बात कि हमारी हस्ती का लाभ और हानि क्या है? विशेष वातावरण में ही अपनी हानि और लाभ का पता लगता है। ज्ञान के यह तीन विषय और विषयों से महत्वपूर्ण है। उपकारी और हितकारी जन सम्मान के विशेष रूप से अधिकारी होते है। हमारी जीवन शक्ति सत्य और सार है। हमारे सब दुख झगड़े बिमारियां, क्लेश, तलाक इसी जीवनी शक्ति वा रूह के द्वारा होते है। एक-एक स्त्री ईर्ष्या के कारण अपनी देवरानी का सन्दूक जला देती है उन्हें देवप्रभावों के मण्डल में बैठने का सौभाग्य मिला और उसने अपने अपराध को भरी सभा में कितने वर्षो के बाद स्वीकार किया। उसने नया सन्दूक बनाया, कपड़े सिल सिल कर उसने कपड़ो से भरा उसे देवरानी को भेंट किया और क्षमा मांगी । सभापति जी ने अपनी मां के प्रति अपने परिवर्तन को बताया और कैसे एक उदण्ड को मां के प्रति अपने परिवर्तन को बताया और कैसे एक उदण्ड को मां की चरण सेवा में लगा दिया।। इस सभा में ऐसा वातावरण बना कि बहुत से जन अश्रुपात कर रहे थे। उन्होंने बताया फिर भी मेरे अन्दर सन्मान तो पैदा हो गया, परन्तु स्वार्थ अब भी नहीं गया। यह सत्संग निराला है। इस सत्संग में आकर उपकारियों के उपकार नज़र आते हैं, दूसरो के गुण नज़र आने लगते हैं। उनके आगे झुकने के लिये मजबूर करते है। अपनी गल्तियां नज़र आकर दुखी करती हैं। जब सम्बन्धों में अन्मेल है, तो आत्मा रोगी है। आत्मा का हित ही मनुष्य का मुख्य कर्तव्य है। यह रोगी होकर मर जाता है। निर्लेप नहीं है। और परिवर्तनों का वर्णन किया । श्रीमान दिवान जी ने अपने भावों का प्रकाश किया।

श्रीमान प्रकाश चन्द जी दीवान :– इन्होंने खड़े होकर अपनी पत्नी को और उसके भाई को बुला लिया । कुछ मिन्टों के लिए हिचकिया लेते रहे, बोल ही नहीं सके। फिर बोले कि यह मेरी धर्म पत्नी है और यह उनके भाई हैं। मैं इन दोनों का गुनाहगार हूं। फूट फूट कर रो रहे थे और अपना अपराध स्वीकार कर रहे थे । मैं शुरू में दर्जी का काम करता था, मेरी धर्म पत्नी ने मेरी पढ़ाई में बहुत सहायता की । मैं पढ़कर प्रोफैसर बना, फिर प्रिंसीपल बना और कई वर्ष रहा यह सब इनके उपकार कारण ही सम्भव हुआ । परन्तु मैं वासना का शिकार होकर इनसे बेवफा बनता रहा और स्त्री से सम्बन्ध हो गए । इसका परिणाम यह हुआ कि इस देवी को सात वर्ष तक घर से दूर रहकर सन्ताप झेलना पड़ा, मैंने यह बहुत बड़ा जुल्म किया है। वह भरी सभा में पत्नी के पैरों पर गिरकर क्षमा मांगते रहे। हाज़िर जन देवात्मा के देव प्रभावों की यह लीला देखकर अश्रुपात करने के लिए मजबूर थे देवात्मा के दर पर सजदा कर रहे थे। उन्होंने पत्नी के भाई से भी क्षमा मांगी । उनके पैरों को हाथ लगाकर झुक रहे थे । देव प्रभावो का यह अजब दृश्य था।

देव आश्रम (डेराबसी) में विशेष सत्संग

जैसा कि पहले पत्रिकाओं में दिया जा चुका था कि 10 अप्रैल से 17 अप्रैल सुबह तक विशेष सत्संग रखा गया। इसमें पदमपुर, लखनऊ, देहरादून, करनाल, कल्याण आदि स्थानों से पहले दिन ही यात्री पहुंच गए थे। शाम को 4.30 बजे प्रवेश सभा की गई ।

यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। भजन, अर्चन और देव स्तोत्र के बाद उन्होंने इस प्रोग्राम की सफलता के लिए दिल के गहरे भावों से सहाय प्रार्थना की।

सभापति जी ने बताया कि धर्म विशुद्ध परोपकार से आराम होता है, दूसरा उच्चतम स्तर है उन उच्च भावों को पैदा करना, जिनसे देवात्मा के साथ सम्बन्ध स्थापित किया जाए । यह बहुत ही विरले जनों के भाग्य में है। हम इस सत्संग में आकर यदि अपने आपको अर्थात अपने आन्तरिक रूप को देख सकें, तभी हमारा यहां आना सफल हो सकता है। हम नीच भावों से भरे पड़े हैं। यहां की देव प्रभावदायक संगत ही हमें अपना सही मूल्यांकन कर सकते हैं। सभापति जी ने बताया कि इस सत्गुरू के दरबार में आने से पहले मैंने भी अपनी बहुत कीमत लगा रखी थी, इन प्रभावों में आकर पता लगा कि मैं शराबी, कबाबी, काम अनुरागी, स्वार्थी अपने आपको क्या समझता था। हम सब ही नीच अनुरागी हैं, जो अपनी कीमत बहुत लगा रखी है। इस सत्संग से लाभ उठाने का एक मन्त्र है कि हम यहां रहते हुए कोई निन्दा चुगली न करें अपने समय को व्यर्थ न खोए, तभी हम पूरा लाभ उठा सकते है।

उसके बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी ने यह बताकर सभा का अन्त किया कि जैसे कार्बनडायआक्साईड और आक्सीजन में अन्तर है, वैसे ही बाहर के वातारण और देव प्रभावदायक मण्डल में अन्तर है। शरीर के लिए आक्सीजन और आत्मा के लिए देव प्रभाव दायक संगत है इसकी कदर करना सीखें।

11.4.2015 सुबह 9.30 बजे :– सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि सौ दो साल पहले मनुष्य को अपने शारीरिक अंगों का भी ज्ञान नहीं था समय के साथ कई तकनीकों के द्वारा बहुत ज्ञान प्राप्त कर लिया है। परन्तु उसके विषय में जानकारी अभी आरम्भिक स्टेज पर है। क्योंकि मनुष्य को अपने स्वभाव का ज्ञान नहीं है। पूजा स्थानो पर पूजा के स्थान बढ़ गए हैं, परन्तु मनुष्य अभी नीचता का ही मुसाफिर है। जब तक मनुष्य को अपनी आन्तरिक चलाने वाली शक्तियों का ज्ञान प्राप्त नहीं होता, तब तक नीचताएं बढ़ती रहेंगी। चोरी, बेईमानी, पशु वध, जुल्म, बलात्कार सम्बन्धी बुराईयां उसी प्रकार हो रही है, जैसे नल से पानी बहता रहता है। मनुष्य को ऐसी ज्योति की आवश्यकता है, जो उसे उसका आन्तरिक रूप दिखा सकें । इन दोषों में से निकालने वाली शक्ति (देव तेज की आवश्कता है)। श्रद्धेय पी. वी. कनल जी ने लिखा है कि नीच शक्तियां ज्वालामुखी पहाड़ की तरह हानि करती हैं। परन्तु जिस मनुष्य के भीतर होती हैं, उसे कुछ पता नहीं होता । उन्होंने कई बहुत प्रभावदायक जीवनियों का वर्णन किया जिन्होंने परम पूजनीय भगवान देवात्मा की ज्योति और तेज को पाकर नीच जीवन को त्याग कर उच्च, सुन्दर और सेवाकारी जीवन प्राप्त किया। यह सब जीवन, देवात्मा के अद्वितीय देव प्रभावों का ही करिश्मा हैं। श्रीमान धर्म बल जी के पिता ने अपने बेटे के चरणों में पगड़ी रखकर क्षमा मांगी, जो पहले उन्हें रिश्वत लेने के लिए मजबूर करते थे। देव प्रभावों की अध्यात्मिक

दुनियां में अजब लीला को बहुत प्रभावदायक ढंग से सभापति जी ने पेश किया।

डेराबस्सी सत्संग, 11 अप्रैल 2015, शाम 4.30 बजे :– सभापति श्रीमान बल बहादुर जी ने बताया कि नेचर में चार तरह के अस्तित्व है भौतिक, वनस्पति, पशु और मनुष्य जगत । इन चारों जगतों के अस्तित्वों के गुण एक दूसरे से भिन्न है। सिर्फ मनुष्य ही अपने जीवन के बारे में कुछ हद तक जानने की शक्ति रखता है । यह काबलियत पशुओं में विकसित नहीं हुई है, पौधों में तो बिल्कुल भी नहीं । पशुओं में कुछ हद तक कई–2 शक्तियों का विकास हुआ है । सभापति जी ने आगे बताया कि मनुष्यों में बीज रूप से ही नीच भाव व नीच घृणाए वर्तमान है। और उनके कारण वह जीवन के विचार से अन्धे बने हुए है। हमारे अन्दर नीच भावों का ज्वालामुखी है। वह कब फट जाएँ हमें पता नहीं चलता और मनुष्यों का सर्वनाश कर देता है। हम अपना सत्यानाश करने के लिये मजबूर हैं। इसलिए हमें अपने–2 स्वभाव को जानना जरूरी है। जो नीच भाव हमारे अन्दर ज्यादा है उतना ही ज्यादा हमारा नुकसान और नाश होता है। स्वार्थ और घृणा से मनुष्य हर रोज अपना वा दूसरों का भी नुकसान करता है और करता रहेगा ।

सभापति जी ने आगे बताया कि मनुष्य को अगर इनसे बचना है तो इनसे उल्ट, स्वार्थ और घृणा को त्याग करे, समाज के लिये कुछ न कुछ त्याग व सेवा करनी पड़ेगी । हमे अपने स्वार्थ से उपर उठकर कुछ त्याग करना पड़ेगा । हमारी शक्तियां अपना व दूसरो का उद्धार करने में लगें, दूसरों की सेवा करने में लगे तभी हम अपना वा दूसरो का भला कर सकते है और समाज की सेवा कर सकते हैं।

12.4.2015 सुबह 9.30 बजे :– सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने देव स्तोत्र का गान कर देव स्तुति की और सहाय प्रार्थना कि वहाँ उपस्थित जनों का आना सफल हो । श्रीमान जी ने बताया कि हम नीच अनुरागी है इसलिए अपना नुकसान करने के लिए मजबूर है। देव प्रभावों के द्वारा हमें हमारा नीच रूप नज़र आ सके । ऐसी प्रार्थना श्रीमान जी ने देव गुरू भगवान के चरणों में की । उनकी कृपा से हमारा हित और कल्याण हो सकें। उन्होंने आगे फरमाया कि ऐतवार का साधन देव समाज में पूजा का साधन माना गया है और पूजा करने का मतलब है कि ऐसी स्थिति में पहुँचना कि जिससे उसे देव प्रभाव मिल जाऐ, और अगर देव प्रभाव मिलते हैं तो पहला काम देव प्रभावों का यह है कि हमें हमारा नीच जीवन, हमारी नीचता नज़र आने लगेगी। पूजा करने के लिए अटल श्रद्धा, अटल कृतज्ञता और अटल विश्वास की जरूरत होती है। सब धर्मो में पूजा करने का साधन भिन्न–2 है कही नाम जपना, या माला जपना, कहीं स्नान करना किताबों का पाठ करना आदि। देव समाज में पूजा करने का लक्ष्य है – ऐसी योग्यता प्राप्त करना कि जिससे वह देव प्रभावों को पा सके । सभापति जी ने आगे चीन के जंगलों का उदाहरण देते हुए बताया कि जैसे सिर्फ खास चील के जंगलों की हवा में रहने से टी.बी. का मरीज ठीक हो जाता है वैसी ही देव प्रभाव सिर्फ भगवान देव आत्मा से मिल सकते है क्योंकि सिर्फ भगवान देवात्मा के अन्दर ही सत्य और शुभ के लिए पूर्णांग प्रेम और असत्य और अशुभ के लिये पूर्णांग घृणा पैदा हुई है। जिसके द्वारा उनमें देव ज्योति और देव तेज का प्रकाश पैदा हुआ जिनकी रोशनी में ही हमें अपनी नीचता नजर आ सकती है और उनके देव तेज वा देव प्रभावों के द्वारा हमें इन नीच अनुरागों से

छुटकारा मिल सकता है। मनुष्य के दुखों का कारण उसका नीच अनुरागों और सुखों का दास बन्धुआपन है। मनुष्य को यह सच्चाई नजर नहीं आती। यह सच्चाई सिर्फ भगवान देवात्मा की देव ज्योति में ही नजर आ सकती है और वह ही उसे सुख अनुरागी दासत्वा से मुक्ति दिला सकते हैं। मनुष्य के देव जीवन को समझने की जरूरत है क्योंकि केवल वह ही मनुष्यों के उद्धार कर्ता हैं श्रीमान जी ने अपने जीवन का परिवर्तन बताया। उन्हें अपनी माता का उपकारी रूप नजर आया सभा में बैठे बैठे और यही उनकी असली पूजा का साधन हो गया । सभापति जी ने आगे बताया कि हम गुरू को जानते है पहचानते नही, अगर पहचानते होते तो हजारों की तदाद में बैठे होते सभा में।

12.4.2015 सांय :– सभापति श्रीमान बल बहादुर जी ने बताया कि मनुष्य के बस की बात नहीं है कि वह अपना भला आप कर सकें। भगवान देवात्मा के देव प्रभावों पाऐ बिना यह सम्भव नहीं है। अपना भला करना तो दूर की बात हम अपना भला बुरा भी नहीं पहचान सकते । धर्म गत जीवन क्या होता है, धर्म क्या है, भगवान ने इसकी व्याख्या बहुत आसान कर दी है। परम्परागत धर्म में यह बताया गया है कि एक हस्ती है जिसका नाम परमात्मा है जो पालक है सब कुछ उसके Control में और सब कुछ उसी की कृपा के कारण है। यह बिल्कुल मिथ्या है। भगवान ने बताया कि हमें अपने भावों को जानने की जरूरत हैं क्योंकि वह ही हमारे परिचालिक हैं। हमारे दुःख सुख सम्बन्धों में हैं। हमारे सुखो के भाव हमें अन्धा बना देते हैं। नीच सुखों के भाव हमें नीचता की ओर ले जाते हैं और हमारा नाश करते हैं। सभापति जी ने कई घटनाएँ बता कर इस तथ्यों को दर्शाया भगवान के देव प्रभावों को पाकर हम अपने आपको पहचानने के लायक बन जाते हैं। सरदार हरनाम सिंह जी के जीवन परिवर्तन की घटनाएँ बता कर इस सभा को उजागर किया और श्रीमान नौध सिंह जी के जीवन परिवर्तन की कथा सुनाई । इन घटनाओं के द्वारा सभापति जी ने बताया कि अपने पापो से छुटकारा पाने के लिए, उनके लिए पश्चताप करना और परिशोध करना लाजमी है सिर्फ पाप छोड़ कर हम धर्म जीवन में प्रवेश नहीं कर सकते। देव प्रभावों के पाने से हमारे सम्बन्ध ठीक हो जाते हैं। घरो में स्वर्ग आ जाता है हमें अपने उपकारियों के उपकार नज़र आ जाते हैं। माता पिता का उपकारी रूप नज़र आने लगता है। हमे दीन बन कर देव प्रभावों को पाने के लिए बार – 2 प्रार्थना करना लाज़मी है ताकि हमारा भला हो सकें हमें धर्म जीवन में प्रवेश मिल सकें नहीं तो हम जिन्दगी भर नरक की जिन्दगी जीने के लिए मजबूर हैं।

13.4.2015 सुबह :– सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने फरमाया कि किताबी ज्ञान पाने से कोई मनुष्य धर्मवान नहीं बन जाता । उसके लिये मनुष्य का अपने हर पहलू में इमानदारी व पवित्रता का होना और बदचलनी, चोरी – चकारी व नशे आदि से बचे रहना जरूरी है। धर्म जीवन में प्रवेश पाने के लिए पहले किये हुए नीच कर्मो के लिए परिशोध करना और उसके बाद श्रद्धा और कृतज्ञता के भावां को पैदा करना जरूरी है, सभापति जी ने साधारण सन्मान के भाव जैसे धनवान, बलवान, उम्र आदि के लिहाज से भाव को साधारण शिष्टाचार बताते हुए कहा कि श्रद्धा का भाव किसी के गुणों को सामने लाकर और गुणों को अपने में न पाकर दुःखी होना और उन गुणों का बिना किसी डर वा लालच के दिल में बार – बार बखान करने को मन करे तो उसके श्रद्धा का भाव विद्धमान है और आगे उसके काम में सहायक बन जाता है। श्रीमान जी ने आगे बताया कि इन उच्च भावों को वर्तमानता उसकी आत्मा को बचाने के

लिए जरूरी है और इन उच्च भावों में श्रद्धा का भाव सबसे उपर है सभापति जी ने श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी और श्रद्धेय श्रीमान हरनाम सिंह जी के जीवन के दृष्टांत देकर उनके भीतर त्याग और तपस्या के भावों का उल्लेख किया। भगवान देवात्मा की इच्छा को फरमान मानकर उस इच्छा को पूर्ण करने के लिए अपने आप को पूरी तरह से समर्पण कर दिया। उनके गुणों को देखकर हम जितना–2 झुक जाऐगे उतना ही हमारा भला होगा। हमे अपने परोपकारियों को हर रोज याद करने की जरूरत है। उन उच्च आत्माओं कर्मचारियो के जीवन से प्रेरणा लेने की जरूरत है। इससे हमारा भला होगा ।

13.4.2015 सांयकाल :– सभापति श्रीमान बल बहादूर जी ने फरमाया कि आमतौर पर हमारे कहे हुए शब्द हमारे भावों के साथ मेल नहीं खाते क्योंकि वह दिल के भावों के साथ नहीं कहा गया होता है। हमारे भावों में, धन्यवाद होता ही नहीं। हम रस्मी तौर पर धन्यवाद का शब्द कह देते है। क्योंकि हम स्वार्थी और अहंकारी का भाव रखते है। और इनके कारण अपना नुकसान करने के लिये मजबूर है। हम गलतियां करने के लिए मजबूर है। मनुष्य के अन्दर परिवर्तन धीरे 2 आता है खासकर उच्च परिवर्तन । इसके लिये हमें दूसरों के गुणों को देखना न कि उनकी बुराई । जितना हम दूसरों के गुणों को देख सकेंगे उतना हमारा भला व विकास होता जायेगा । अपनी झूठी मान बढ़ाई व प्रशंसा के लिये हम बुरे काम करने के लिए तैयार हो जाते हैं। इनसे बचने के लिये इन के लिये तीव्र घृणा का पैदा होना जरूरी है नहीं तो हम धर्म लाभ नहीं कर सकते ।

14.4.2015 सुबह :– सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने फरमाया कि किसी की अच्छाई देखने के लिये हमारे अन्दर श्रद्धा के भाव का होना वा पैदा करना जरूरी है। हमें अपने उपकारियों को, उनके उपकारों को बार बार याद करने की जरूरत है। हमें ऐसे उपकारियों को, उनके उपकारों को बार 2 याद करने की जरूरत है। हम ऐसे उपकारियों को ढूढ़े व उनके बारे में पढ़े जिन्होने दूसरों पर उपकार किये है उनके बारे में जाने और उनके गुणों को देखें । सभापति जी ने आगे फरमाया कि किसी को प्रणाम करते हुये अगर हमारे सामने उनके गुण नज़र आते है तो वह सच्चा प्रणाम होगा । भगवान देवात्मा की छवि को प्रणाम करते हुऐ। हम उनके उपकारों और गुणों को स्मरण करें और देखने की कोशिश करे । सभापति जी ने आगे बताया कि अगर हमे सच्चे मन से किसी के उपकार नज़र आते हैं तो उसके प्रति प्रतिउपकार न कर हम कृतघ्न बनते हैं। उन्होंने भामाशाह, गुरू अंगद देव, गुरू गोबिन्द सिंह जी, सुभाष चन्द्र बोस, श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी और गोबिन्द वल्लभ पंत के जीवनों से घटनाएँ बताकर कि कैसे उपकारियों के उपकार देखकर उन्होंने प्रति उपकार करने के भावों को पैदा करके कई प्रकार के त्याग किये, बलिदान देने के लिये तत्पर हो गये, अपना सारा जीवन अपना सारा धन भेंट कर दिया ।

14.4.2015 सांयकाल :– सभापति श्रीमान बलबहादूर जी ने फरमाया कि हमें नहीं पता कि कौन से पक्ष में हमारे उद्धार की जरूरत है व चाहते हैं। जब हम भगवान से यह प्रार्थना करते हैं कि भगवान मेरा उद्धार कर दो तो हम उस समय आमने सामने अपनी कमजोरी वा नीचता को सामने लाकर प्रार्थना करे कि इस कमजोरी को देख कर उसे दूर करने के लिये आपकी रोशनी मिल जाए और उस कमजोरी को देख पाने के बाद हमें यह प्रार्थना करनी है हमें भगवान देवात्मा से, उनसे देव शक्तियों का तेज मिल जाऐ जिससे अपनी योग्यता अनुसार हम उन नीच भावों से व कमजोरियों से

मुक्ति पा सकें । हमें यह प्रार्थना बार-बार सच्चे दिल से करनी पड़ेगी । हमें दिल की गहराईयों से यह महसूस हो कि इनसे छुटकारा पाऐ बिना मेरा उद्धार नहीं हो सकता। सभापति जी ने आगे बताया कि किसी लक्ष्य को पाने के लिये संघर्ष करना पड़ता है और त्याग करने पड़ते है। अगर लक्ष्य उच्च वा सात्विक है तो और भी ज्यादा त्याग करना पड़ता है भगवान के दर पर आकर हमें गलत व ठीक की पहचान आने लगती है। अपनी कमजोरियों से निजात पाने के लिये हमें देव ज्योति की रोशनी वा उनके देव प्रभावों की जरूरत है। हम अपनी कमजोरियों व नीच अनुरागों से छुटकारा पा सके और आगे चलकर दूसरों को भी उनकी कमजोरियों से छुटकारा पाने में मदद करके देव भगवान के कार्य को आगे बढ़ाऐ और भगवान देवात्मा के मिशन में अपना-2 योगदान अपनी योग्यता के अनुसार दे सकें । आपका जीवन आगे से अच्छा बन सके यही भगवान के दर पर प्रार्थना है। जब भगवान का अमृत मिल जाता है तो जीवन बदल जाते, सम्बन्ध मधुर हो जाते हैं और जीवन सुखी हो जाते हैं।

15.4.2015 सुबह :– सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि संसार में धर्म को लेकर खूब पूजा पाठ होते है। गुरू महाराज ने नई रोशनी दी है उन्होंने फरमाया कि धर्म एक अच्छा इन्सान बनने का नाम है अपनी हानि लाभ जानना धर्म की क्रिया है। जो बुराई करता है वह अपने आप को मारने का काम करता है। भला भली भावनाएँ पैदा करने से बनता है और भाव शक्तियां है जो हमें मिलती है उच्च भावनाऐ पैदा करके ही उच्च जीवन में पर्दापण हो सकता है। पहले उच्च भाव इमानदारी का भाव मनुष्य के अन्दर हो उसके साथ-2 पवित्रता का और श्रद्धा व सन्मान का और कृतज्ञता का भाव भी हो तो धर्मवान बन सकता है। उसको उपकारियों के उपकार नज़र आए और वह उन्हें ऋण की न्याई महसूस करे और उसके प्रति उपकार करे तो मनुष्य धर्म जीवन में आगे बढ़ सकता हैं। जिनके घरों में शुक्रगुजारी का भाव होता है वह घर स्वर्ग बन जाते हैं। सभापति जी ने सरदार जमीयत सिंह जी और सरदार सावन सिंह जी के जीवन के दृष्टांत देकर उनके अन्दर के शुक्रगुजारी के भाव को दिखाया । एक बादशाह और उसके वजीर की शुक्रगुजारी की कहानी बताई।

15.4.2015 सांयकाल :– सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने फरमाया कि इन्सान को अगर यह समझ में आ जाये कि उनका असली दुश्मन कोई और नहीं वह खुद ही है तो वह बच सकता है मनुष्य नीच सुखों व अनुरागों का दास बन कर अपने दुःखों से रोता है वह उनका बन्धुआ बना हुआ है। हम दूसरो के नुक्स तो देखते है लेकिन अपनी तरफ नज़र नही जाती । धन अनुरागी मनुष्य अपने जीवन को बचाने के लिये भी धन खर्च नहीं करना चाहता और अपनी बिमारी का इलाज किये बिना मर जाता हैं। घमंडी अपना व्यवसाय बर्बाद कर बैठते हैं। क्रोधी, द्वेष पूर्ण मनुष्य दूसरो को दुःख पहुँचाने के चक्कर में खुद अपने जीवन से हाथ धो बैठता है । इन सत्यों को सभापति जी ने महेन्द्र हलवाई और पोस्ट मास्टर की कहानी बताकर उजागर किया । सिर्फ भगवान की ज्योति मिल जाने पर ही हमें अपनी नीच गतियां व नीच घृणाओं का पता चल सकता है और उनके देव प्रभावों व तेज का बल पाकर ही इनसे छुटकारा पा सकते हैं।

16.4.2015 सुबह :– श्रीमान बलदेव जी ने फरमाया कि दुनियां में खूब भजन कीर्तन, रतजगे, स्नान, पूजाएँ होती हैं लेकिन धर्म नहीं आता । मनुष्यों के जीवन नहीं बदलते । वह अच्छा इन्सान नही बन सकता । धर्मवान तो बिल्कुल नहीं बनता । गुरू महाराज ने बताया है कि अपने हृदय में परहित भाव उपजाए बिना

हम धर्म के मार्ग पर नहीं चल सकते । शुक्रगुजारी का भाव मनुष्य का अपना हित तो करता ही है जब वह दूसरों का हित करता है। यहाँ शुक्रगुजारी और श्रद्धा का भाव सेवा है, जबकि वहाँ तो कुछ धर्म है। हमारा वजूद अपने आप नहीं है यह दूसरो की देन है हमारे ऊपर अनगिनत मेहरबानियों की बरसात हुई है। जिनको मेहरबानों की मेहरबानिया नज़र नहीं आती उनकी आन्तिरक आँखे नहीं हैं । वह अभागे है। सभापति जी ने कई उदाहरण देकर यह सत्य दर्शाया। रमेश जी की पत्नी सन्मान योग्य भजनी ने अपने भाईयों की मेहरबानियों का जिक्र किया और धन्यवाद दिया । श्री शाम लाल जी ने दीवान साहिब का धन्यवाद किया जिनके कारण वह सत्संग में आ सकें । श्रीमान दीवान जी ने भी अपने उपकारियों को याद करके उनको धन्यवाद किया उन उपकारियों के उपकारी रूप का ब्यान किया। श्रीमान झंडा सिंह जी ने अपनी माता जी के उपकारों का वर्णन किया और कृतज्ञता का इजहार किया।

16.4.2015 सांयकाल :– सभापति श्रीमान डी.एस. चौहान जी ने अपने जीवन से उदाहरण देकर बताया कि कैसे उनके भाईयों रिश्तेदारों ने आगे पढ़ने में मदद की, प्रोत्साहन दिया, और पढ़ाई और नौकरी लगाने में मदद की, नही तो वह खेत में हल चला रहा होता क्योंकि घर के हालात ऐसे नही थे कि पिता जो मेरी पढ़ाई का खर्चा उठा सकते । उन्होंने कहा कि उन्होंने आज तक जो कुछ भी किया वा बना वह सब दूसरो की मेहरबानियों का नतीजा है। मै उनका बार – 2 धन्यवाद करते नही थकता यह सब शुक्रगुजारी के भाव भगवान देवात्मा की शरण में आने बाद ही महसूस हुआ व समझ में आई कि मै सिर्फ दूसरों की मेहरबानियों के कारण ही मै जिन्दगी में आगे बढ़ सका । और दुनिया की मोटी – 2 नीच भावों से बचा रहा । उन्होंने आगे फरमाया कि कोई भी Selfmade नहीं है। हमारी जिन्दगी में बहुत से अस्तित्वों का Contributions है। सभापति जी ने आगे बताया हर एक इन्सान में कोई न कोई गुण व अवगुण होते है। पशुओं में भी गुण होते है, कुत्ते वा घोड़े में कृतज्ञता भाव बहुत देखा गया है वह मालिक को कभी नहीं भूलता। नेपोलियन वा पन्ना धाए के जीवन की घटनाए सुनाकर कृतज्ञता के भाव को दिखाया । सभापति जी ने भौतिक और वनस्पति जगत के उपकारों का वर्णन किया कि कैसे उनकी कृपा के बिना मनुष्य का जीवन सम्भव नहीं हैं।

17.4.2015 सुबह :– सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने फरमाया कि आमतौर पर हर कोई सुन्दर दिखना चाहता है और उसके लिये कई प्रकार के यत्न करता है। धन और समय खर्च करता है। शीशे में बार – 2 अपने आप को देखता है। लेकिन दुनिया में ऐसा कोई शीशा नहीं बना जो मनुष्य को उसकी अन्दर छिपी हुई भयानक तस्वीर दिखा सकें । हमारे अन्दर के दोषों को दिखा सके। हमारे अन्दर नीच भावों का ज्वालामुखी है जो कभी भी फटने के लिए तैयार रहता है और हमें पता नही होता । हमारी धार्मिक पुस्तके नही दिखाती कि हमारे अन्दर क्या – 2 नीचताएँ हैं। हर धर्मो के लोग पाठ करते तो है लेकिन उन्हें अपनी कमियां नजर नही आती और घर नर्क का नमूना बना रहता है। लेकिन गुरू भगवान देवात्मा के चरणों में आकर भी नहीं पता चलता और गलतियां करते है। बड़े – बड़े Priest, धर्मगुरू, Heads आपस में लड़ पड़ते हैं क्योंकि उन्हें अपनी बुराईया नज़र नही आती। केवल देव समाज में आकर जब हमें भगवान की ज्योति मिलती है तो हमें अपना असली रूप नज़र आने लगता है। हमें अपने रोग नज़र आने लगते हैं।

भाव प्रकाश

श्रीमान मधू–सूदन जी :– श्रीमान जी जब अपने महाराज रणजीत सिंह जी का वर्णन किया, कि उनकी माता के देहान्त पर उन्होंने कहा कि मुझे काना (उन्हें आंख दिखता नहीं था) कहने वाली चली गई । इस घटना ने मेरे दिल को रोशन कर दिया और मुझे विवश कर दिया यह कहने कें लिए कि मेरी मां भी मुझे लंगड़ा कहती थी, वह चली गई । मैंने मां को कई बार चोट पहुंचाने वाली बातें कही हैं । जब मैं बिमार था, तो उनसे बेइन्तहा सेवा पाई है। मैं उस सेवाकारी मां पर गर्जा, बहुत बार गुस्सा किया, वह चुपचाप सहती रही। आप फटे, पुराने कपड़े पहनकर, मुझे अच्छे कपड़े पहनाती रही। मेरी बिमार हालत में मेरी गन्दगी उठाई। मुझे स्वयं नहलाना, मालिश करना, अपनी समझ अनुसार अच्छी से अच्छी खुराक देना, घर वालों से छुपाकर मुझे दूध पिलाना। परन्तु मै नाशुकरा बेटा उनकी कुछ भी सेवा नहीं कर पाया । जब से गुरू का दर मिला है, कुछ न कुछ सेवा कर सका, वर्ना वैसे ही चले जाते, मैं तो उनका सदा ऋणी हूं।

सभाओं में बैठकर नरेन्द्र जी और दीपचन्द जी सहयोगी मिले है। वह कुर्सी की बात सुनाते है, जैसे कुर्सी पर लादकर वह बिमार रूहों को यहां पर लाते हैं। हम सबकी भी बहुत सेवा करते हैं। बहुत प्यार और सम्मान देते है। इसी प्रकार यह नये जनों को लाते रहें।

दूसरा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी हम लोगों के दरवाजों पर जाकर दिली कामना करते है, यह नज़ारा गुरू महाराज के समय की याद दिलाता है। सभा एक से बढ़कर एक होती रही, बड़ा लाभ हुआ है धन्य धन्य हो गया ।

खुशपाल सिंह (पुनियां गांव, नये सत्संगी):– मेरे पिता जी की मृत्यु जब मैं 16 वर्ष का था, तभी हो गई थी । मेरे बड़े भाई ने हमें सम्भाला। मेरे भाई का परिवार, मैं मेरा छोटा भाई और छोटी बहन आदि परिवार में थे। मेरे बड़े भाई की भी 1984 में मृत्यु हो गई । मै, मेरी माता जी और छोटे भाई ने परिवार को सम्भाला कुछ वर्षो के बाद भाई के बेटे भी कमाने लग गए । किसी कारण हमारा आपस में बंटवारा हो गया। मैंने अपनी तरफ से दोनों परिवारों को अपने से अधिक ही दिया था । मैं इस अहंकार में रहता था कि मैंने किसी का हक नहीं खाया । परन्तु मैं भूल गया कि जब हम इक्ट्ठे थे, तो सारा परिवार मेरा कहना मानता था, इसलिए मार्किट में मरी Goodwill उनसे ज्यादा बन गई। मैं आज यह महसूस करता हूं कि मेरे भतीजे, मेरे भाई मेरे उपकारी है। जिनके कारण मार्किट में मेरी पहचान हुई । मेरे भाई को अधरंग हो गया है, मेरा छोटा भतीजा कमज़ोर है। मैं वादा करता हूं मै अपनी पहुंच अनुसार उनकी सेवा करूंगा । यह सब भगवान देवात्मा की मेहरबानी है, जो मुझे यह नज़र आया है।

शौर्य जी (श्री अकबरपुर) : मै सत्संग में नही आना चाहता था, परन्तु नाना जी के जोर देकर भेजने पर दुखी था, परन्तु यहां आकर मुझे अनुभव हुआ है कि मुझे सत्संग की बहुत आवश्यकता है। मैं बड़ों के रोकने टोकने पर घृणा करता हूं। आगे से पूरी कोशिश करूंगा कि मैं बड़ों की आज्ञा का पालन करू और उन्हें सन्मान दूं। अपनी गल्तियों को देखने की कोशिश करूं।

झन्डा सिंह पुन्डीर : मै अपनी बीते हुए दिनों की काली करतूतो अपनी मैली काली छवि को अपने तारणहारे बचावनहार परमपूज्य परमहित कर्त्ता परम कल्याणकारी सर्वागीण सच्चे धर्म अवतार परम पूजनीय श्री देवगुरू भगवान देवात्मा द्वारा प्रदत्त हल्की सी देव ज्योति को पाकर आप सब के समक्ष सच्ची–2 जो मुझे जिस मात्रा में स्मरण है ब्यान करता हूं। मुझे मेरे मामा जी श्री किशनसिंह चौहान जी विशेष सम्मान के योग्य श्रीमान बलदेव सिंह जी के पास सन् 1971 में

खुद छोड़ कर गये और कहा कि टाइपिंग का अभ्यास भी करते रहना। मैं श्रीमान जी के पास रहता रहा। श्रीमान जी मेरा बहुत ख्याल रखते और अपने बच्चे की तरह समझाते रहते । मुझे एक पीतल की स्टोव और खाना बनाने के सामान भी दिये मै अपना खाना बनाना सीख गया और श्रीमान जी से प्रेरित होकर नमक खाना भी छोड़ दिया। उस समय मुझे वजीफे केतौर पर 50/- प्रति माह मिलता था जिसमे से अपने खर्च से बचाकर कुछ रूपये घर भी मनीआर्डर भेजा करता था फिर हमारे घर के आर्थिक हालात को महसूस करके कुछ समय के लिये मुझे सनौली के पास फार्म पर भी भेजा और मुझे गॉव भेजने के लिये 350 रूपये दिये जो मैने गांव भेज दिये लेकिन मुझ दुष्ट प्रवृति ने फार्म पर जो तूड़ी बेचने का काम विश्वास करके मुझे सौंपा मैने उसमें हेराफेरी करनी शुरू की । जब मै हिसाब देने लगा तो श्रीमान जी को उसमें कुछ गड़बड़ी महसूस हुई फिर मुझे ठीक से याद नहीं क्या हुआ। उस समय चंडीगढ़ श्रीमान सुरजीत सिंह गिल जी भी रहते थे जो बिजली विभाग में सर्विस करते थे। एक बार मैने उनके घर से भी 100/- का नोट उडा लिया जो उनको पता चल गया और मेरे मामा जी को बताया मुझे याद है मेरे मामा जी ने मुझे रो रोकर पूछा लेकिन मेरे पत्थर दिल पर उसका कोई असर नहीं हुआ । इसके बाद भी श्रीमान सुरजीत सिंह जी ने मेरे मामा जी के कहने पर अपने गाँव अंगाकीडी जहां उनके भाई महतपुर में बिजली विभाग में सर्विस करते थे वहां उन्होंने मुझे सर्विस भी दिलाने की कोशिश की लेकिन शुरू में खम्बा गड़वाने में शर्म महसूस करके और मेहनत के डर से उनके बहुत समझाने के बावजूद वहां से गांव चला गया। कुछ समय बाद मामा जी ने मुझे एक सेठ जी जो कि देवसमाजी थे उनके पास लगा दिया। अम्बाला अनाज मंडी में मै उनकी दुकान में ही सोता था । ताकि दुकान में कोई चोरी ना हो। लेकिन रक्षक ही भक्षक बन गया। मैने अन्दर से पुरानी तिजोरी की चाबी से कुछ रेजगारी (चिल्लर) निकालनी शुरू कर दी जो कि उस चाबी से पूरी तिजोरी नहीं खुल पायी थी। दो दिन बाद सेठ जी को इसका आभास हो गया और उन्होंने रात को नौ बजे अपने छोटे सुपुत्र को मेरे पास भेजा । उन्होंने पहले तो प्यार से मुझे समझाने की कोशिश की परन्तु मै नहीं माना और बाद में उन्होंने पुलिस की धमकी दी तो मै डर गया और सब कुछ सच सच बता दिया। देवसमाजी परिवार होने की वजह से पुलिस नहीं बुलायी और मेरे मामा जी को बुलाकर बताया और मामा जी मुझे अपने साथ ले गये और मै गांव चला गया। कुछ दिन बाद मै फिर देव समाज हैड आफिस चण्डीगढ़ 3345, 21-डी में आ गया । श्रीमान जी ने फिर मुझ पर उपकार करने शुरू कर दिये मुझे अंग्रेजी लिख कर देने लगे। मुझे मोगा धर्म विकासालय भेजा। सोलन देवाश्रम भेजा और फिर श्रीमान विकास देव जी के पास फरीदाबाद देवाश्रम, और बाद में श्रीमान रूपचन्द जी के पास गुड़गाव बाउन्ड्री (चारदीवरी) केलिये गय। फिर मैं चण्डीगढ़ आ गया । अम्बाला जिन सेठ जी के पास मैंने अपराध किया था उन्होंने श्रीमान जी की सेवा में मेरी करतूत का जिक्र कर दिया और वो पत्र मै देखकर बड़ा शर्मशार हुआ और डर गया। दफ्तर में एक डेविड़ नाम अंग्रेज भी रहता था, मैने उसके लगभग 500/- रूपये और उसका कुछ सामान लेकर दिल्ली भाग गया और वहां से पंजाब मेल में बैठकर बम्बई चला गया और लगभग तीन चार दिन वहां घूमता रहा। सोचा था घर वापिस नहीं जाऊँगा या अपनी जान ही दे दूंगा लेकिन ऐसे अपराधी कहा जान देते हैं। आखिरकार मेरठ हाथी खाने फौजी भरती दफ्तर से आर्मी में भरती हो गया । चार पांच साल तो शराब से बचा रहा। धीरे-2 माहौल हावी होता गया अच्छी संगत छूट गयी और मांस को खाना शुरू कर दिया। फौज में स्टोर में रहता था तो उसमें भी छोटी मोटी चोरी करता रहा। 20 वर्ष के बाद प्रीमेचर रिटायरमेन्ट से घर आ गया। जीवन साथी ने बच्ची की कसम देकर मांसाहार तो छुडवा दिया लेकिन शराब पीने और बेचने का सिलसिला

चलता रहा। सूरत में रिलायंस में नौकरी लग गयी थी अच्छी भली Pay मिलती थी फिर भी सब आदमी बिजली के मीटर में गडबडी करते थे। फिर सन 2002 में विशेष घटना घटी जिसने मेरे जीवन में तूफान ला दिया। जून 2002 में जवाहर लाल जी और नवनीत जी की पार्टी ने आत्मबल विकास शिविर का अयोजन किया। मै अपने साथियों के साथ अति हर्ष के साथ उसमें शामिल हुआ। जीवन बदल गया प्रतिज्ञा की कि शराब पीऊँगा नहीं और ना औरों को दूंगा । बिजली विभाग में प्रार्थना पत्र देकर मीटर बदली करवाया और हानि परिशोध के तौर पर रूपये देने की पेशकश की लेकिन उन्होंने मना कर दिया और बोला कि किसी अच्छे काम में दान कर दो वह पैसा मैंने उस वक्त कोई 2500/- के करीब गऊशाला में दान कर दिया। देव समाज का पवित्र साहित्य खरीदा और नियमित और न्याय भाव से पढ़ना मनन करना शुरू कर दिया। सुखनानी परिवार जो सूरत में ही था वहां प्रत्येक रविवार सत्संग करना और परम धर्म बोध मिशन के आत्म बल विकास शिविरों में बडे ही उत्साह और चाव से अपने परिवार रिश्तेदार और कुछ गांव वालो के साथ शामिल होना शुरू कर दिया। सांसारिक प्रलोभन फीके पड़ गये। नयी ऊर्जा प्राप्त होने पर परिशोधों का सिलसिला चलने लगा जिसको भी सताया तडपाया उससे रोराकर माफी मागनी शुरू की । मां की जहां तक हो सका सेवा करनी शुरू की। शरीर जो बिमारियों से घिरने वाला था स्वस्थ हो गया। आत्मा को स्वस्थ करने का सिलसिला जारी है। मन में एक टीस सी रहती थी कि जिन श्रीमान बलदेव सिंह जी से अनगनित उपकार पाये उनको तडपाया दिल दुःखाया उनसे तो माफी मांगी ही नहीं दिल बहुत दुःखी अनुभव होता था । 01/04/2015 को विशेष सन्मान के योग्य श्रीमान जी को डरते दिल से हिम्मत करके फोन किया उस समय श्रीमान जी सैर को गये थे । विशेष सन्मान के योग्य आदरणीय श्रीमति सुरजीत बराड़ जी ने फोन अटेण्ड किया ओर बड़े अच्छे तरीके से बात की और कहा कि मैं श्रीमान जी को बता दूंगी फिर श्रीमान जी ने हित भाव से भरकर मुझ कृतघ्न को फोन किया अच्छी तरह से बात की। बच्चों के बारे पूछा और 10 – 17 अप्रैल सत्संग में आने के लिए प्रेरित किया और मैं खिचा चला आया। यहां आकर श्रीमान जी से बात करके दिल को बहुत शुकून प्राप्त हुआ आत्मा के विकास का पथ प्रशस्त किया मेरा यह सब लिखने का अभिप्राय सिर्फ इतना है कि इस संगत में रहकर ही शरीर और उससे भी बढ़कर आत्मा का विकास होता है और कटकर विनाश के पथ का राही बनकर विपथगामी होकर मनुष्य तड़फ तड़फ कर बहुत ही दर्दनाक मौत को प्राप्त होता है। मै बोधी आत्मा बन सकूं सहायकारी शक्तियों की सहायता प्राप्त हो अन्धेरे से उजाले में जा सकूं, ऐसी मेरे तारणहार बचावनहार सर्वांग विकास कर्ता निराले सरताज परमपूज्य श्री देवगुरू भगवान से आशीर्वाद की भिक्षा याचना करता हूं। अति विनम्र भाव से अति कृतघ्न, अति तुच्छ कृपापात्र ,

(झन्डा सिंह पुन्डीर)

यह सारा सत्संग अधिकारी आत्माओं के लिए बहुत हितकर सिद्ध हुआ, एक 2 सभा के अन्दर एक जन प्रभावित होकर बोलने के लिए मजबूर हो गया। 12/4 की सुबह की सभा में श्रीमान झण्डा सिंह जी उठकर खड़े हो गए, उन्होंने बताया कि मै अपनी काली छाया बताना चाहता हूं। मै श्रीमान जी पास रहा और भी कई जगह रखा गया। तजोरी की चाबी बनवा कर जो अंग्रेज श्रीमान जी के पास रहता था, उसके 500 रूपये चुरा लिए । मैं अब आप धर्म सम्बन्धियों वा गुरू महाराज के कारण बच रहा हूं । इस प्रभावों की बेहद जरूरत है, फिर श्रीमान जी के पैर पकड़ लिए । (बाद में उन्होंने अपना भाव प्रकाश लिख कर दिया।)

सभा में ही ज्ञानचन्द्र जी गोनियाना बोलना चाहते

थे, परन्तु समय न होने के कारण वह शाम की सभा में खड़े हो गए कि मै बहुत नीच हूं, मैंने एक बार मां की तरफ लपक कर हाथ उठाया, मारा तो नहीं पर कसर नहीं छोड़ी, यह कहकर उन्होंने अपने मुंह ओर सिर को पीटना शुरू कर दिया, बहुत दुखी थे । गुरू महाराज के प्रभावों का अदभुत नजारा था । फिर उन्होंने अपनी धर्म पत्नी के सम्बन्ध में भी अपने व्यवहारों के प्रति बताया और गोनियाना जाकर अपनी पत्नी और शायद अपने बेटे से भी क्षमा मांगी, उन्होंने बताया कि जब से वह सत्संग से गए है, हमारा घर स्वर्ग बन गया है। ज्ञान चन्द जी ने ऐसे सत्संग में बार – 2 आने की जरूरत को भी अनुभव किया। एक और सभा में उन्होंने बताया कि मीठा खाकर मैंने वज़न बढ़ा लिया है, मैं एक हफ्ते तक बिल्कुल मीठा नहीं खाऊंगा, आगे से भी कम करूंगा ।

संगरूर सत्संग

17.4.2015 देव आश्रम (डेराबस्सी) में 17.4.2015 को सुबह सत्संग की समाप्ति हुई और 15 – 16 यात्रियों की पार्टी शाम तक संगरूर देव धर्म मन्दिर में पहुंच गई 17 अप्रैल को रात को 8.30 बजे पहली सभा की गई। यह सभा श्रीमान बलाबहादुर सिंह जी ने करवाई। सभापति जी ने बताया कि धर्म जीवन न होने के कारण कहलाने वाले धर्म मतों के पुजारियों के नीच जीवन की सच्ची घटनाओं द्वारा महानर्क फैला हुआ है। हमारे जीवनों में जो दुख और हानियां हैं वह हमारे नीच जीवन के कारण हैं। माता – पिता सन्तान का सम्बन्ध, भाई – भाई का, भाई बहनों का, पति पत्नी के सम्बन्ध/हृदय विदारक सच्ची घटनाएं बताईं, और इनमें सम्बन्धों में मेल, प्यार और सन्मान बढ़ाकर ही धर्म जीवन आता है। परम पूजनीय भगवान देवात्मा के देव प्रभावों के द्वार आश्चर्यजनक परिवर्तन आया है। एक – 2 पति जो राक्षस था, वह सारी उमर अपनी बिमार पत्नी की सेवा करने में लगा दिया। एक – 2 बेटी जो उच्च शिक्षा प्राप्त, उच्च पद पर पदस्थ अपनी मां के प्रति इतनी कृत्घन थी, कि उसके हाथों मां नालां थी, उसे ऐसी सेवाकारी बेटी बना दिया कि उसकी मां ने धन्य – 2 होकर जीवन जीया । फिर सभापति जी ने अपने जीवन में आए परिवर्तन का ब्यान किया। इस कामना के साथ सभा समाप्त की गई कि काश! हमारा मुख सदा देवात्मा की ओर रह सके ।

18.4.2015 सुबह 8.30 बजे :– सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी थे। इस सभा में कुछ अध्यापक और डाक्टर भी शामिल हुए । नीच घृणा पर रोशनी डाली गई । इस भयानक भावना का शिकार होकर मनुष्य अपने सम्बन्धों में कैसे नर्क और तबाहीं पैदा करता है। उसकी सच्ची घटनाएं बताई गईं । गुरू महाराज नीच घृणा को आत्मिक रोग दिखाते हैं, उस रोग को दिखाकर अधिकारी आत्माओं में उच्च परिवर्तन पैदा करते हैं। इस सभा में एक सिवल सर्जन भी हाज़िर थे । पूजनीय भगवान की अद्वितीय शिक्षा की महिमा सब अनुभव कर रहे थे ।

दोपहर की सभा 4.15 बजे :– इस सभा में श्रीमान जी ने बाहर से आए यात्रियों से हितकर बातचीत की। धर्म तीन बातों पर रोशनी नहीं डालता जो देव धर्म डालता है (1) विश्व क्या है? (2) आत्मा क्या है? (3) देव आत्मा कौन हैं? विश्व सम्बन्धी मोटी मोटी बातें बताई गई।

रात 8.30 बजे :– सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि मनुष्य दूसरों को अपने दुख देने वाले समझता है। जैसे हिंसक जीवों, सांप, शेर आदि और अन्य अपने सुखों के अपहरण करने वालों को हम अपना दुश्मन समझते हैं। जबकि सत्य यह है मनुष्य का सबसे बड़ा दुश्मन उसका अपना आप है। जितनी हानि मनुष्य अपने ही नीच सुखों का दास होकर करता है, उसकी इतनी हानि उसका कोई और शत्रु नही कर सकता। नीच जीवन द्वारा बर्बादी, और तबाही लाने वाली घटनाओं का वर्णन किया।

19.4.2015 रविवार सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी सुबह 8.30 बजें :– पूजनीय भगवान का अर्चन, देव

स्तोत्र का गान व व्याख्या के बाद भजन का गान किया गया। फिर सभापति जी ने दिल की गहराई से आशीर्वाद प्रार्थना की और सभापति जी ने बताया कि धर्मो के अन्दर बहुत पूजा पाठ होते हैं, उनके द्वारा किसी का कोई भला नहीं होता । वास्तव में मनुष्य की प्रकृति क्या है? किसी भी धर्म ने इस रहस्य से पर्दा नहीं उठाया । परम पूजनीय भगवान देवात्मा मनुष्यों से असंख्यों गुणा अधिक योग्यता लेकर पैदा हुए हैं। उन्होंने मनुष्य की प्रकृति का सत्य रूप समझा है। उन्होंने फरमाया है कि सब मनुष्य सुखों के दास हैं, सब पापी और रोगी हैं, इसलिए सब को दुखों और हानि का शिकार होना पड़ता है। फिर मनुष्य के तीन अधूरेपन बताए गए। मनुष्य ज्योति हीन है। दूसरा, अपनी प्रकृति की हानिकारक अवस्था को जानकर भी अपने आप उससे मुक्त नहीं हो सकता । तीसरी, मनुष्य अपने आप अपने भीतर रूहानी स्वस्थ्यकर अंगों को पैदा और विकसित नहीं कर सकता। केवल गुरू महाराज उक्त तीनों अभावों को दूर करने में सक्षम हैं।। सभापति जी ने अपने परिवर्तन को भी पेश किया।

19.4.2015 दुपहर बाद 4.15 बजे :– सभापति श्रीमान बल बहादुर सिंह जी ने विश्व की विशालता के विषय में वर्णन किया। विश्व में जो जीवित वा अजीवित अस्तित्व हैं, वह सब नेचर के अंश है। उनके भीतर उनकी अपनी ही शक्तियों के द्वारा हर अस्तित्व परिवर्तित होते हैं। नेचर का अंश होने के कारण प्रत्येक अस्तित्व उसके नियमों के अधीन है। विश्व की शक्तियां भी परिवर्तित होती रहती हैं। निर्जीव शक्ति धीरे – धीरे जीवित शक्ति बन जाती है। विश्व के भीतर विकास और विनाश के नियम सदा काम करते हैं। मनुष्य की आत्मा भी परिवर्तित होती है। आत्मा निर्लेप नही हैं। भगवान देवात्मा का आर्विभाव भी इसी विकास क्रम की देन है। नेचर के नियम पूर्ण अटल हैं और विश्वव्यापी हैं।

20.4.2015 सुबह 8.30 बजे :– सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि इसमें कोई शक नहीं कि इस दर पर आए बिना मनुष्य का ठिकाना नहीं, यह हमें तो रोज़े रोशन की तरह साफ है। धर्म का नाम ही अच्छा इन्सान बनना है। जो मनुष्य उच्च गुणों से भरपूर हो, जो अच्छा मजदूर, अच्छा मालिक वा अफसर हो, अच्छा पति वा पत्नी हो, तभी वह कुछ धर्मवान है। अच्छे वा महान जनों के गुण नज़र आ जाएं तो धर्म की A.B.C. शुरू होती है। सच्चे सन्मान पूर्वक प्रणाम ही वास्तविक प्रणाम हैं। सन्मान भाव धारी बने बिना गुणधारी नहीं बन सकते । ईमानदार, पवित्र, दयावान लोग सन्मान वा प्रणाम के योग्य हैं। जिन भावों द्वारा यहां सेवा हुई है, उसके लिए प्रणाम के योग्य हैं । जिन भावों द्वारा यहां सेवा हुई है, उसके लिए दिल से सन्मान देने के लिए मजबूर होना चाहिएं। प्रणाम करते समय दूसरे के गुण और मेहरबानियां नज़र आनी चाहिए । गुण ग्रहण करने का यही तरीका है। सन्मान से खाली इन्सान भला इन्सान नहीं हो सकता। लाल बहादुर शास्त्री जी ने अपने बेटे को सच्चा प्रणाम करना सिखाया। सिर्फ गुणवान मनुष्य को ही प्रणाम नहीं करना, गुणधारी पौधों को भी सन्मान देना है अर्थात प्रणाम करना है। मत्था टेकते टेकते श्रद्धा का गुण पैदा हो जाता है। श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी ने आज्ञा देकर एक नौजवान को एक बुजुर्ग को प्रणाम करने भेज दिया, उन्होंने प्रणाम करके कहा कि प्रणाम करके मेरा हृदय ठण्डा हो गया। दिल की नफरत की आग बुझ गई। दिल दिल में उन्होंने श्रीमान जी को धन्यवाद दिया। एब्राहिम लिंकन, फलोरेंस नाईटिगेल, बहुत महान व्यक्ति थे। आनंदपुर की धरती प्रणाम करने योग्य है। गुरूबख्श सिंह प्रीतलड़ी ने अपनी भैंस नन्दी को इतना सन्मान दिया, कमाल की घटना है । हमारा सिर यदि महान व्यक्तियों के आगे झुकता है, तो सच्चा साधन हो जाता है।

Published on 5th of the month

Regd. Postal No.CHD (0077) 2015-17
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

जरूरी निवेदन

पाठकों की सेवा में निम्र निवेदन हैं कि साथी सेविकों के सम्बन्ध में 30 मई से पाठ और विचार के दिन आरम्भ हो चुके हैं। उन दिनों को सच्चे साधनों द्वारा सफल बनाने की कृपा करें।

सेवक यज्ञ 30 जून से 2 जुलाई तक मनाया जा रहा है। 3 जुलाई से स्वास्तित्व के सम्बन्ध में पाठ और विचार कि दिन शुरू हो चुके हैं, इन दिनों को उच्च साधनों द्वारा सफल बनाने की कृपा करें।

सत्य धर्म बोद्ध उत्सव 28 अगस्त से 30 अगस्त 2015 तक देव आश्रम में मनाया जा सकता है।

–मंत्री

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने **Surya Laser Den, Chandigarh** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts